3, 71, 438
प्रकाशन संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

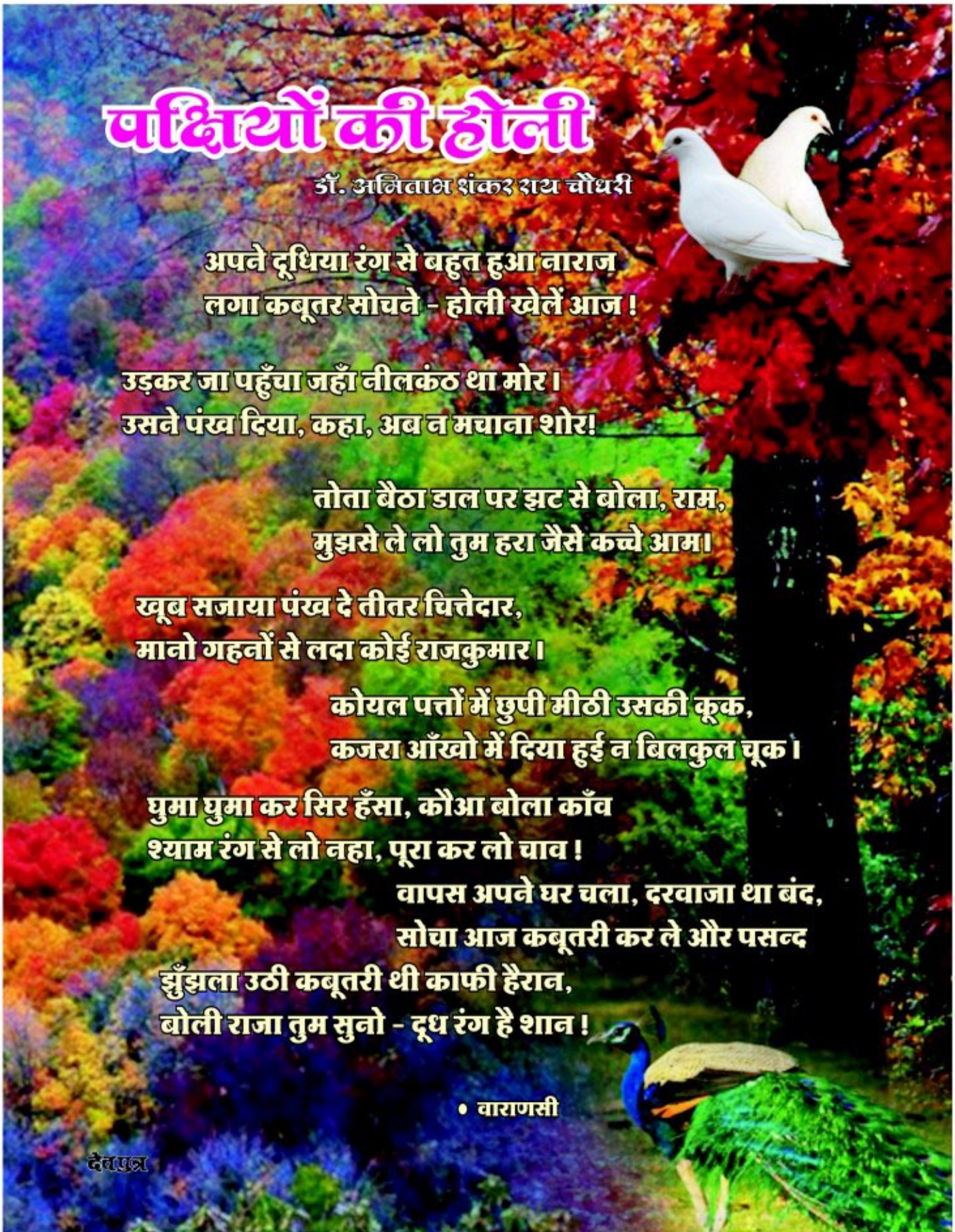

पक्षियों की होली

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

अपने दूधिया रंग से बहुत हुआ नाराज
लगा कबूतर सोचने - होली खेलें आज !

उड़कर जा पहुँचा जहाँ नीलकंठ था मोर।
उसने पंख दिया, कहा, अब न मचाना शोर!

तोता बैठा डाल पर झट से बोला, राम,
मुझसे ले लो तुम हरा जैसे कच्चे आम।

खूब सजाया पंख दे तीतर चित्तेदार,
मानो गहनों से लदा कोई राजकुमार।

कोयल पत्तों में छुपी मीठी उसकी कूक,
कजरा आँखो में दिया हुई न बिलकुल चूक।

घुमा घुमा कर सिर हँसा, कौआ बोला काँव
श्याम रंग से लो नहा, पूरा कर लो चाव !

वापस अपने घर चला, दरवाजा था बंद,
सोचा आज कबूतरी कर ले और पसन्द

झुँझला उठी कबूतरी थी काफी हैरान,
बोली राजा तुम सुनो - दूध रंग है शान !

• वाराणसी

देवपुत्र